भारत के प्रमुख द्वीप समूह–एक दृष्टि में

पुष्पेन्द्र कुमार अग्रवाल
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

प्रस्तावना

द्वीप अथवा टापू (Island) **जल के बीच के स्थल** को कहा जाता है। यह चारों ओर समुद्र या नदी से घिरा हुआ कोई प्रदेश या भू–भाग होता है। द्वीप देश की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन द्वीपों में सशस्त्र बलों की उपस्थिति भारतीय समुद्री क्षेत्र में समुद्री डाकुओं के हमलों को रोकती है। कुछ द्वीपों के घने वनों से आच्छादित होने के कारण हमें मूल्यवान लकड़ी प्राप्त होती है। पर्यावरण संरक्षण के लिए द्वीपों का अत्यधिक महत्व है। द्वीप अद्वितीय सांस्कृतिक, जैविक और भूभौतिकीय मूल्यों को केंद्रित करते हैं, और वे लाखों द्वीपवासियों की आजीविका का आधार प्रदान करते हैं। द्वीप मानव–पर्यावरण संबंधों के आदर्श स्थल हैं। द्वीप के निवासी आजीविका के लिए स्थानीय संसाधनों पर निर्भर हैं। द्वीप की संस्कृतियां और उनका समृद्ध जैव–सांस्कृतिक ज्ञान, स्थायी मानव–प्रकृति संबंधों को पुनर्जीवित करने, और नवप्रवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण आधार हो सकता है। द्वीप कई प्रकार के होते हैं, और कई प्राकृतिक कारणों से बनते हैं। बहुत–से छोटे–छोटे द्वीपों के समूह को 'द्वीपपुंज' और बहुत बड़े द्वीप को महाद्वीप कहते हैं। इनका आकार कुछ वर्ग मीटर से लेकर हज़ारों वर्ग किलोमीटर तक पाया जाता है, बहरीन द्वीप को मोतियों का द्वीप कहा जाता है। स्थिति के आधार पर द्वीपों को महाद्वीपीय द्वीप, महासागरीय द्वीप, एवं उष्णकटिबंधीय द्वीप के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। विश्व में ब्रिटेन, जापान, आयरलैंड, मेडगास्कर, फॉकलैंड (अटलांटिक) देश या प्रदेश द्वीपों पर स्थित हैं। **ग्रीनलैंड विश्व का सबसे बड़ा द्वीप** है, जबकि मेडागास्कर **विश्व का सबसे छोटा द्वीप** है। भारत के कोचीन द्वीप को चित्र–1 में दर्शाया गया है।

चित्र–1: भारत का कोचीन द्वीप

भारत में उपलब्ध द्वीप

भारत में कुल 247 द्वीप हैं जिनमें से 204 द्वीप बंगाल की खाड़ी तथा शेष द्वीपों में से अधिकांशतः अरब सागर में स्थित हैं । बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीपों में अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, पश्चिमी बंगाल में सागर द्वीप (गंगासागर), भारत एवं बांग्लादेश के मध्य स्थित **न्यू मूरे द्वीप, पम्बन द्वीप, श्रीहरिकोटा द्वीप, हेयर द्वीप , उड़ीसा में अब्दुल कलाम द्वीप, काकीनाडा में होप द्वीप, आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले में श्रीहरिकोटा द्वीप इत्यादि ,** तथा अरब सागर में स्थित द्वीपों में लक्षद्वीप, दमन एवं दीव द्वीप समूह, पीरम द्वीप, बेलोन हेनरे द्वीप, कैनरे द्वीप, बुचर द्वीप, एलीफैण्टा द्वीप, अरनाला द्वीप, भटकल द्वीप इत्यादि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त मजुली द्वीप, ब्रह्मपुत्र नदी में स्थित है। भारत में स्थित द्वीपों में अंडमान एवं

निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन एवं दीव द्वीप समूह, एवं माजुली द्वीप प्रमुख हैं। इनका विस्तृत वर्णन निम्न खण्डों में किया गया है।

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (चित्र–2) भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश है, जिसकी राजधानी अंडमानी शहर, पोर्ट ब्लेयर है। यह द्वीप बंगाल की खाड़ी के दक्षिण में 6° से 14° उत्तरी अक्षांश एवं 92° से 94° पूर्वी देशांतर के मध्य हिंद महासागर में स्थित है और भौगोलिक दृष्टि से दक्षिण पूर्व एशिया का भाग है। यह द्वीप इंडोनेशिया के आचेह के उत्तर में 150 किमी पर स्थित है । अंडमान और निकोबार द्वीप समूह लगभग 572 छोटे–बड़े द्वीपों से मिलकर बना है, जिनमें से सिर्फ कुछ ही द्वीपों पर लोग निवास करते हैं। बंगाल की खाड़ी में स्थित इस प्रदेश के अंतर्गत अण्डमान समूह में लगभग 20 बड़े द्वीप हैं जो 350 किमी की दूरी तक फैले हुए हैं। इसी प्रकार निकोबार द्वीप समूह में भी 19 बड़े द्वीप हैं, जिनमें से कुछ द्वीपों का विस्तार 60 से 100 किमी तक फैला हुआ है। **अंडमान और निकोबार द्वीप समूह** के अंतर्गत आने वाले प्रमुख द्वीपों में बड़ा अण्डमान, उत्तरी अण्डमान, मध्यवर्ती अण्डमान, दक्षिणी अण्डमान, छोटा अण्डमान, कार निकोबार, महान् निकोबार, तिलानचोंग, चनूम्ता, टैरेसा, कमोरटा, कचाल, नान करोटी, ट्रिकेट द्वीप आदि प्रमुख हैं।

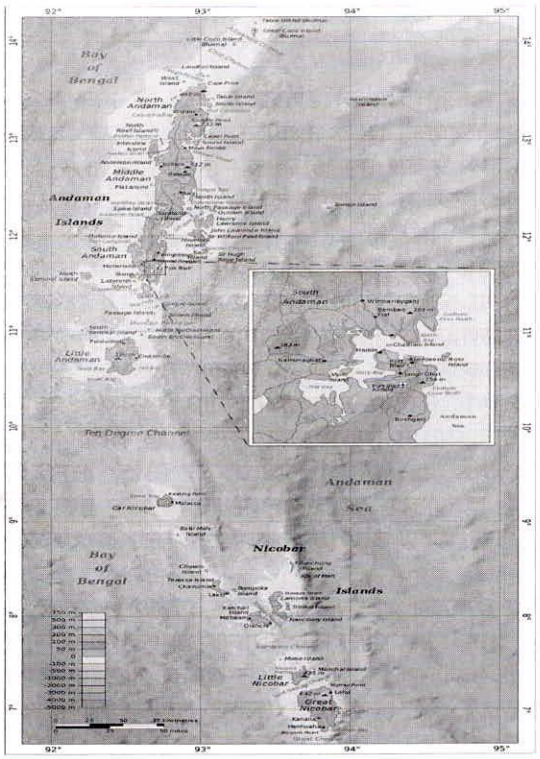

चित्र–2: अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह का स्थिति मानचित्र (स्रोतः विकीपीडिया)

2011 की जनगणना के अनुसार अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की कुल जनसंख्या 379,944 है। जिसमें 202,330 (53.25%) पुरुष तथा 177,614 (46.75%) महिला हैं। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह का सम्पूर्ण क्षेत्रफल लगभग 8249 वर्ग किमी है, जिसमें अंडमान जिले का क्षेत्रफल 6408 वर्ग किमी और निकोबार जिले का क्षेत्रफल 1841 वर्ग किमी है । अंडमान और निकोबार

द्वीपसमूह की समुद्र तल से ऊंचाई शून्य से 732 मीटर के मध्य परिवर्तनीय है। पौराणिक किवदंतियों के अनुसार अंडमान की खोज त्रेता युग में हुई थी। यह कहा जाता है कि, सीता की खोज में हवाई मार्ग से लंका जाते समय हनुमान यहाँ पर उतरे थे। अंडमान एवं निकोबार में मुख्यतः जन जातियां पाई जाती है, जिनमें अंडमान द्वीप समूह में जरावा, अंडमानी, ओंगेस तथा निकोबार द्वीप समूह में निकोबारी, एवं शोम्पेन नामक आदिवासी जन जातियां मुख्य हैं।

चित्र–3: अंडमान द्वीप का एक दृश्य

वर्तमान समय में अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह का अन्वेषण अरब व्यापारियों द्वारा 9वीं शताब्दी में हुआ। बाद में मराठाओं के द्वारा इस क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित कर लिया गया, तथा वर्ष 1729 तक यहाँ मराठाओं का आधिपत्य स्थापित रहा। अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में यहाँ पोर्ट ब्लेयर में सेलुलर जेल नामक कारागार का निर्माण किया (चित्र–4) जिसका उपयोग स्वतंत्रता सैनानियों को सजा देने के लिए किया जाता था, जिसे 'काला पानी की सजा' कहा जाता था। चारों ओर समुद्र होने के कारण एक बार यहाँ आने के बाद जीवन पर्यंत यहाँ से कैदियों की मुक्ति लगभग असंभव थी।

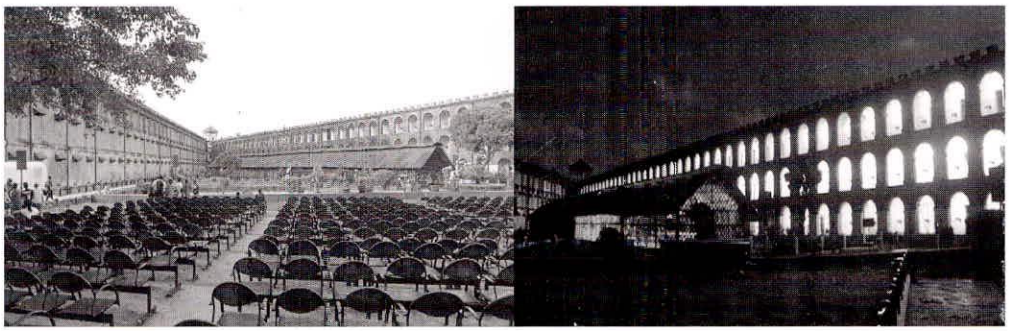

चित्र–4: पोर्ट पोर्ट ब्लेयर में सेलुलर जेल

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह की स्थलाकृति पर्वतीय है तथा यहाँ उष्णकटिबंधीय वनस्पतियां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इस द्वीप में सदाबहार घने वन, उष्णकटिबंधीय वृक्ष एवं जल सतह पर दल दल में मैन्ग्रोव के वृक्ष प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। द्वीप समूह का 86% भाग वनों से आच्छादित है। अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के उत्तर से दक्षिण के 700 वर्ग किमी से अधिक क्षेत्र में मात्र 36 द्वीप आवास योग्य हैं, ये द्वीप घने वनों से आच्छादित हैं, तथा यहाँ अद्वितीय विविधताओं के पुष्पों एवं पक्षियों की उपलब्धता पाई जाती है। इन प्रायद्वीपों में मई से

सितम्बर एवं नवम्बर से जनवरी माह मेंऔसतन कुल 3000 मिलीमीटर वार्षिक वर्षा होती है। यहाँ सामान्यतः तापमान में अधिक परिवर्तन नहीं पाया जाता है। यहाँ का न्यूनतम एवं अधिकतम तापमान क्रमशः 23°C एवं 30°C डिग्री सेंटीग्रेड पाया जाता है। अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में सापेक्ष आर्द्रता 70% से 90% के मध्य रहती है। अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में अनेको छोटी–छोटी सरिताएं उपलब्ध हैं जिनकी लम्बाई बहुत कम हैं।

अंडमान द्वीप की कुल लम्बाई 467 किलोमीटर व अधिकतम चौड़ाई 52 किलोमीटर है। अंडमान द्वीप की माध्य चौड़ाई 24 किलोमीटर है। निकोबार द्वीप आकार में अंडमान द्वीप की तुलना में छोटा है। निकोबार द्वीप की कुल लम्बाई 259 किलोमीटर व अधिकतम चौड़ाई 58 किलोमीटर है। अंडमान द्वीप समूह में सबसे बड़ा द्वीप मध्य अंडमान है, जिसका क्षेत्रफल 1536 किमी^{2} है, जबकि निकोबार द्वीप समूह में महान् निकोबार सबसे बड़ा द्वीप है जिसका क्षेत्रफल 1045 किमी^{2} है।

लक्षद्वीप समूह

लक्षद्वीप, भारत के दक्षिण–पश्चिमी तट से 200 से 440 किमी दूर एक द्वीपसमूह (चित्र–5) है, जो 8° से 12.3° उत्तरी अक्षांश एवं 71° से 74° पूर्वी देशांतर पर अरब सागर में स्थित है। यह द्वीपसमूह भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश होने के साथ–साथ एक जिला भी है। पूरे द्वीपसमूह को लक्षद्वीप के नाम से जाना जाता है। लक्षद्वीप द्वीपसमूह में बारह प्रवाल द्वीप (toll), तीन प्रवाल भित्ति (reef) और पाँच जलमग्न बालू के तटों को मिलाकर कुल 36 छोटे–बड़े द्वीप हैं। यह द्वीपसमूह भारत का सबसे छोटा केंद्र–शासित प्रदेश है और इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी है, जबकि इस द्वीप का लैगून क्षेत्र 4,200 वर्ग किमी, प्रादेशिक जल क्षेत्र 20,000 वर्ग किमी और महासागरीय क्षेत्र 400,000 वर्ग किमी है। इस क्षेत्र के कुल 10 उपखण्ड साथ मिलकर एक भारतीय जनपद की रचना करते हैं। कवरत्ती लक्षद्वीप की राजधानी है, और यह द्वीपसमूह केरल उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। यहाँ का न्यूनतम एवं अधिकतम तापमान क्रमशः 27°C एवं 32°C डिग्री सेंटीग्रेड पाया जाता है। इन प्रायद्वीपों में औसतन कुल 1500 से 2000 मिलीमीटर वार्षिक वर्षा होती है।

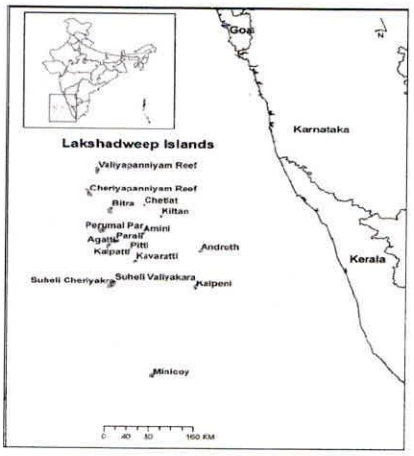

चित्र 5: **लक्षद्वीप का स्थिति मानचित्र (स्रोतः विकीपीडिया)**

चूँकि द्वीपों पर कोई आदिवासी आबादी नहीं हैं, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग–अलग इतिहास सुझाते हैं। पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार 1500 ईसा पूर्व के आसपास इस क्षेत्र में मानव बस्तियाँ मौजूद थीं। नाविक एक लंबे समय से इन द्वीपों को जानते थे। द्वीपों का उल्लेख ईसा पूर्व छठी शताब्दी की बौद्ध जातक कथाओं में भी किया गया है। सातवीं

शताब्दी के आसपास मुस्लिमों के आगमन के साथ यहाँ इस्लाम का प्रादुर्भाव हुआ। मध्ययुगीन काल के दौरान, इस क्षेत्र में चोल राजवंश और कैनानोर के साम्राज्य का शासन था। कैथोलिक पुर्तगाली 1498 के आसपास यहाँ पहुँचे, लेकिन 1545 तक उन्हें यहाँ से खदेड़ दिया गया। इस क्षेत्र पर तब अरक्कल के मुस्लिम घराने का शासन था, उसके बाद टीपू सुल्तान का। 1799 में टीपू सुल्तान की मृत्यु के बाद अधिकांश क्षेत्र ब्रिटिशों के पास चले गए और उनके जाने के बाद, 1956 में केंद्र शासित प्रदेश का गठन किया गया।

समूह के सिर्फ दस द्वीपों: अन्द्रोत्त, कवरत्ती (मुख्यालय), अगत्ती, मिनिकॉय, अमिनी, बितरा, चेल्लात, कदमत, कालपेनी एवं किलपन पर मानव आबादी है। 2011 की जनगणना के अनुसार, केन्द्र–शासित प्रदेश की कुल जनसंख्या 64,473 है। अधिकांश आबादी स्थानीय मुस्लिमों की है, और उनमें से भी ज्यादातर सुन्नी सम्प्रदाय के हैं। द्वीप समूह जातीय रूप से निकटतम भारतीय राज्य केरल के मलयाली लोगों के समान हैं। लक्षद्वीप की अधिकांश आबादी मलयालम बोलती है। लोगों का मुख्य व्यवसाय मछली पकड़ना और नारियल की खेती है, साथ ही टूना मछली का निर्यात भी किया जाता है।

दमन और दीव द्वीप समूह

दमन और दीव मुंबई के समीप अरब सागर में भारत के पश्चिमी तट पर स्थित द्वीप समूह हैं जो भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश है। केंद्र शासित प्रदेश दमन और दीव के अन्तर्गत दो ज़िले दमन और दीव आते हैं। दोनों ही ज़िले भारत के पश्चिमी तट पर 700 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। यहाँ की राजधानी दमन है।

दमन द्वीप

दमन और दीव की राजधानी दमन है। दमन को पूर्व में दमाओ के नाम से जाना जाता था । दमन मुख्य भूमि पर गुजरात राज्य के दक्षिणी भाग के निकट है। पहले यह पुर्तगालियों के कब्जे में था। स्वतंत्रता के बहुत बाद तक यह पुर्तगालियों के कब्जे में रहा। 1961 ई. जब गोवा को पुर्तगालियों के कब्जे से मुक्त कर भारत में मिलाया गया, उसी समय दमन को भी भारत में शामिल कर लिया गया। 1987 ई. में इसे अलग से केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा दिया गया। दमन जिला उत्तर में कोटक नदी से, पूर्व में गुजरात राज्य से, दक्षिण में कलाई नदी से तथा पश्चिम में खम्भात की खाडी से घिरा हुआ है। समुद्र तल से दमन की ऊंचाई मात्र 12 मीटर है। समुद्र के अत्यधिक निकट होने के कारण यहाँ का न्यूनतम एवं अधिकतम तापमान क्रमशः 20°C एवं 36°C डिग्री सेंटीग्रेड के मध्य रहता है ।

दीव द्वीप

दीव द्वीप गुजरात राज्य के जूनागढ़ ज़िले के ऊना के समीप है। दीव को संस्कृत शब्द द्वीप से लिया गया है । दीव ज़िले का कुछ भाग मुख्य भूमि पर है जिसे घोगला कहा जाता है। सिम्बोर के नाम से जाना जाने वाला दीव का एक छोटा सा भाग गुजरात में दीव से 25 किलोमीटर की दूरी पर है। पौराणिक कथाओं के अनुसार पांडवों ने अपने तेरह वर्ष के वनवास के समय कुछ समय यहाँ पर स्थित मणि नगर नामक स्थान पर व्यतीत किये थे। एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार यह कहा जाता है कि दीव पर दैत्य जलंधर का शासन था जिसका वध भगवान् विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र से किया गया था। दीव द्वीप का क्षेत्रफल 38.5 वर्ग किलोमीटर एवं समुद्र तल से ऊंचाई 29 मीटर है। समुद्र के अत्यधिक निकट होने के कारण यहाँ का न्यूनतम एवं अधिकतम तापमान क्रमशः 20°C एवं 38°C डिग्री सेंटीग्रेड के मध्य रहता है। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा लगभग 700 मिलीमीटर तक होती है। दीव द्वीप अहमदपुर, चक्रतीर्थ, मांडवी, औसत एवं गोमतीमाता नामक अपने सौन्दर्यपूर्ण तटो के लिए प्रसिद्ध है।

ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित माजुली द्वीप

माजुली असम के ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में बसा एक बड़ा नद्य द्वीप है, जो 26°45' से 27°12' उत्तरी अक्षांश एवं 93°39 ' से 94°35' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के सर्वेक्षण अनुसार वर्ष 1853 में इसका कुल क्षेत्रफल 1246 वर्ग किमी था, परन्तु प्रतिवर्ष प्राकृतिक और मानवजनित कारणों के कारण 2001 के सर्वे के अनुसार इसका कुल क्षेत्रफल सिकुड़ कर मात्र 421.65 वर्ग किमी रह गया है। दलदली इलाकों को छोड़कर माजुली की लम्बाई पूर्व पश्चिम में 45–48 किमी है जबकि इसकी चौड़ाई उत्तर दक्षिण की ओर 7–10 किमी है। माजुली द्वीप समुद्री सतह से 85–90 मीटर की औसत ऊँचाई पर अवस्थित है। माजुली द्वीप के दक्षिण में ब्रह्मपुत्र नदी और उत्तर में खेरकुटिया खूटी नामक धारा अवस्थित है। खेरकुटिया खूटी ब्रह्मपुत्र नदी से निकलती है, और आगे चलकर फिर ब्रह्मपुत्र नदी में ही समाहित हो जाती है। उत्तर में सुबनसिरी नदी खेरकुटिया खूटी से जुड़ जाती है। माजुली द्वीप कालांतर में ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियों विशेषकर लोहित नदी के दिशा और क्षेत्र परिवर्तन के कारण बना है। वास्तव में 7वीं सदी की शुरुआत में, माजुली एक बड़े क्षेत्र का एक भाग था और ये काफी संकरा और लम्बा था। उस समय इससे "माजोली" यानी दो समानांतर नदियों के बीच की जगह, के नाम से जाना जाता था। माजुली के उत्तर में ब्रह्मपुत्र नदी जिसे पहले लोहित, लुहित या लुईत के नाम से जाना जाता था, बहती थी और इसके दक्षिण में दिहिंग नदी बहती थी, अलग अलग नदियों द्वारा लाये गए मिट्टी और रेत के जमाव से नदियों की धाराओं में बदलाव होने लगा, और यह एक अलग भूखंड का स्वरुप लेने लगा।

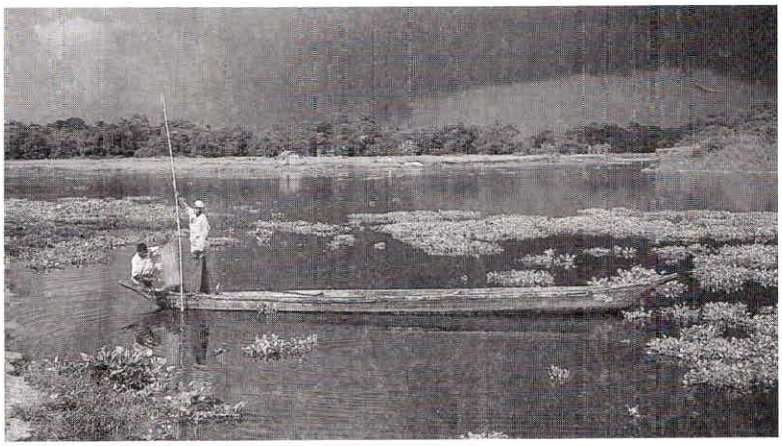

माजुली नदी द्वीप, ब्रह्मपुत्र बेसिन की विशाल गतिशील नदी प्रणाली का एक हिस्सा है। ब्रह्मपुत्र नदी की कुल लंबाई 2706 किमी और जलग्रहण क्षेत्र (catchment area) 5,80000 वर्ग किलोमीटर है। ब्रह्मपुत्र की इस नदी प्रणाली में माजुली द्वीप का निर्माण एक असाधारण भौगोलिक घटना है। यह क्षेत्र ब्रह्मपुत्र नदी के ऐसे भू–भाग में स्थित है, जहाँ से अनेक सहायक नदियाँ निकलती हैं, और उत्तरी और दक्षिणी किनारों में डेल्टा क्षेत्र बनाती हैं। ब्रह्मपुत्र नदी से उत्पन्न बाढ़ सक्रिय मैदानों के मध्य से प्रवाहित होती हैं, और उसकी अनेक उपनदियाँ दक्षिण और उत्तर दोनों तरफ से आकर इसमें समाहित होती हैं। इसीलिए माजुली गंभीर बाढ़ में ही नहीं बल्कि सामान्य बाढ़ में भी जलमग्न हो जाता है। ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी और दक्षिणी किनारों पर दलदली क्षेत्र (wetlands) हैं, जिन्हें यहाँ की स्थानीय भाषा में "बील" कहते हैं। ये बील वनस्पतियों और जीवों के प्रजनन और विकास के लिए उत्तम वातावरण प्रदान करते हैं। माजुली का जिला मुख्यालय जोरहाट शहर है जो यहाँ से 20 किमी की दूरी पर है। माजुली को असम की सांस्कृतिक राजधानी भी कहा जा सकता है। माजुली पूर्वी असम का नव वैष्णव विचारधारा का मुख्य केंद्र है।

असम के अन्य भागों की तरह माजुली द्वीप में भी उप–उष्णकटिबंधीय मानसून जलवायु पायी जाती है। यहाँ की जलवायु परिस्थितियाँ भारत के पूर्वोत्तर मैदानी क्षेत्रों के समान ही हैं। ग्रीष्म ऋतु आमतौर पर गर्म रहती है, और अत्यधिक नमी बनी रहती है। यहाँ का न्यनतम एवं अधिकतम तापमान क्रमशः 7°C एवं 36°C तक पाया जाता है। माजुली में मानसून का मौसम जुलाई से अगस्त माह में रहता है। इस ऋतु में जनमानस को यहाँ भयंकर बाढ़ का सामना करना पड़ता है। क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा लगभग 2150 मिलीमीटर है।

2011 की जनगणना के अनुसार, असम के जोरहाट जिले में स्थित माजुली की स्थानीय जनसंख्या 167304 है। जिनमें पुरुषों की जनसंख्या 85566 और महिलाओं की जनसंख्या 81738 है। माजुली में विभिन्न जाति के लोग रहते हैं। इन्होनें माजुली की शानदार सांस्कृतिक विरासत के लिए अमूल्य योगदान दिया है। यहाँ अनुसूचित जनजाति के अधिक निवासी पाए जाते हैं। द्वीप में 47% जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की है, जिनमें मिसिंग, देउरी और सोनोवाल–कछारी शामिल हैं। माजुली की आबादी में असमिया के अन्य उपजाति जैसे–कलिता, कोंच, नाथ, अहोम, चुतीया, मटक और ब्राह्मण भी रहते हैं। इन के अलावा, चाय जनजाति के लोग, नेपाली, बंगाली, मारवाड़ी और मुसलमान भी यहाँ पाए जाते हैं।

चित्रः माजुली स्थित एक गाँव

माजुली की अर्थव्यवस्था विविध और आत्मनिर्भर क्षेत्रों पर आधारित है। यहाँ का मुख्य उद्योग कृषि है और मुख्य उत्पाद धान/चावल है। यहाँ एक समृद्ध और विविध कृषि परंपरा है। माजुली में उगाई जाने वाली मुख्य फसलें हैं– चावल, मक्का, गेहूं, अन्य अनाज, काला चना, सब्जियां, फल, अन्य खाद्य फसलें, कपास, जूट, अरंडी, गन्ना आदि। लोगों की आर्थिक स्थिति के उत्थान के लिए माजुली के उद्योग में अन्य उद्योगों में मछली पालन, मिट्टी के बर्तनों के उत्पादन, हस्तशिल्प और हथकरघा उद्योग, आदि जैसे उद्योग शामिल हैं।

यहाँ अनेक प्रजातियों के दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रवासी पक्षियों का आवागमन चलता रहता है। इनमे हवासील (पेलिकान), साइबेरियन क्रेन और ग्रेटर एडजुटेंट सारस जैसे प्रवासी पक्षी शामिल हैं। इन पक्षियों को देखने के लिए नवंबर से मार्च के बीच का समय सबसे उत्तम होता है ।

द्वीपों से प्राप्त होने वाले प्रमुख लाभ

1 द्वीप भारत को सीमा की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम बनाते हैं। इन द्वीपों में सशस्त्र बलों की उपस्थिति भारतीय समुद्री क्षेत्र में समुद्री डाकुओं के हमलों को रोकती है। द्वीप समूह भारत की सुरक्षा के लिए आवश्यक महासागरों और समुद्रों में निगरानी तथा संचार के लिए नौसेना एवं थल सेना के सहायक हो सकते हैं।

2. द्वीपों का उपयोग समुद्र में नौसेना बंदरगाह के लिए किया जा सकता है जो द्वीपों में व्यापार को विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है।

3. द्वीपों की असाधारण सुंदरता पर्यटकों को आकर्षित करती है जिसके कारण द्वीपों को पर्यटन के रूप में विकसित किया जा सकता है। अंडमान एवं निकोबार द्वीपों में जल क्रीडाओं को विकसित किया गया है, जिससे पर्यटक यहाँ आकर्षित होते हैं, जिससे

रोजगार के नए अवसर प्राप्त होते है। द्वीपों का उपयोग मछली व्यवसाय के रूप में भी किया जा सकता है।

4. अंडमान एवं निकोबार जैसे द्वीप के घने वनों से आच्छादित होने के कारण हमें आबनूस, सागौन, महोगनी जैसी मूल्यवान लकड़ी पाप्त होती है।
5. द्वीपों पर विभिन्न प्रकार के मसालों का भी उत्पादन किया जाता है जिनका मुख्य रूप से निर्यात किया जाता है।
6. पर्यावरण संरक्षण के लिए द्वीपों का अत्यधिक महत्व है।

उपसंहार

द्वीप हमारे देश की महत्वपूर्ण एवं अमूल्य धरोहर हैं। द्वीप अद्वितीय सांस्कृतिक, जैविक और भूभौतिकीय मूल्यों को केंद्रित करते हैं, और वे लाखों द्वीपवासियों की आजीविका का आधार प्रदान करते हैं। द्वीप मानव–पर्यावरण संबंधों के आदर्श स्थल हैं। द्वीप के निवासी आजीविका के लिए स्थानीय संसाधनों पर निर्भर हैं। द्वीप की संस्कृतियां और उनका समृद्ध जैव–सांस्कृतिक ज्ञान, स्थायी मानव–प्रकृति संबंधों को पुनर्जीवित करने, और नवप्रवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण आधार हो सकता है।